Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2024

भारत में जातिवाद और राम मनोहर लोहिया के विचार

हेमलता रौतवार [1] | डॉ. अनुपम चतुर्वेदी [2]

[1] रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर.

[2] शोध निदेशक, सह आचार्य(राजनीति विज्ञान) राजकीय महाविद्यालय बाँगड, पाली.

ABSTRACT:

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया भारत के प्रमुख आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक थे, उन्होनें भारत के विभिन्न स्वाधीनता आन्दोलन और समाजवादी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। गाँधीवाद से प्रेरित और भारतीय समाजवाद की आधारशिला रखने वाले लोहिया का जीवन पीड़ित, शोषित और दुखी जनता को समर्पित था। वे जीवन पर्यंत प्रयासरत रहे की भारतीय समाज की रूढ़ियों को समाप्त कर आम व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सके। जातिवाद आधुनिक भारत की विकट समस्या है जिसे निरंतर अनेक प्रयाशों के बावजूद मिटाया नहीं जा सका है। लोहिया जी द्वारा दिए उनके विचारों जैसे जाती तोड़ो, सहभोज, अन्तर्जातीय विवाह, आर्थिक समानता आदि के द्वारा भारत के सामाजिक तानेबाने में बसी इस समस्या को हल किया जा सकता है।

KEYWORDS:

जातिवाद, गाँधीवाद, स्वाधीनता, सहभोज, सप्त-क्रांति, पित्रसत्तात्मक, पूंजीवाद।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th December 2024	30th December 2024

प्रस्तावना

भारत में जातिवाद का इतिहास बहुत पुराना है। यह विविध जाति और समुदायों के बीच विभिन्न प्रकार के विवादों और संघर्षों की उत्पत्ति करने वाली एक गंभीर समस्या है। इसके आधार में अक्सर धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक कारक होते हैं। जातिवाद भारत के विभिन्न युगों में देखा जा सकता है, जैसे कि वैदिक काल, मध्यकाल, और आधुनिक काल। वैदिक काल में, जातिवाद का आधार धार्मिक शास्त्रों और वेदों में खोजा जा सकता है। मध्यकाल में, जातिवाद और भी गंभीर हो गया और यह विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों के बीच विभाजन का कारण बनता गया।

भारत में जातिवाद का इतिहास बहुत विस्तृत और जटिल रहा है, और समय के अनुसार यह और भी गंभीर समस्या बनता गया है। इसे निम्न कालानुक्रम के अनुसार समझा जा सकता है।

1. प्राचीन काल:

वैदिक काल में समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया था: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। यह विभाजन कर्म और योग्यता के आधार पर था, लेकिन समय के साथ यह जन्म पर आधारित हो गया।

2. मध्यकाल:

इस काल में जातिवाद और भी मजबूत हो गया। विभिन्न राजवंशों ने इसे बढ़ावा दिया, और जाति आधारित पेशे और सामाजिक भूमिकाएं और समाज स्थिर होती गयी

3. औपनिवेशिक काल:

ब्रिटिश शासन के दौरान जाति व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए कई नीतियां अपनाई गई। उन्होंने जनगणना के माध्यम से जातियों का विवरण दर्ज किया और जाति आधारित विभाजन को बढ़ावा दिया।

4. स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक काल:

आधुनिक काल में, भारत के संविधान ने जातिवाद को रोकने के लिए कई कानून और नीतियां प्रदान की हैं, महात्मा गांधी, डॉ. बी. आर. अंबेडकर और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय संविधान ने जातिवाद को समाप्त करने के लिए कई प्रावधान किए लेकिन यह अभी भी वर्तमान भारत में एक गंभीर समस्या है।

5. वर्तमान स्थिति:

वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्यों में भी जातिवाद का वीभत्स रूप भारतीय समाज मैं व्याप्त है। इसे समाप्त करने के लिए आजादी से अब तक विभिन्न प्रयास किए गए है और आज भी जारी है। वर्तमान भारतीय समाज में जातिवाद की स्थिति में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हालांकि कानूनी और संवैधानिक प्रयासों के बावजूद, जातिवाद का प्रभाव अभी भी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। वर्तमान परिवेश को निम्न पहलुओं से समझा जा सकता है -

6. आरक्षण नीति:

भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों (**SC**) और अनुसूचित जनजातियों (**ST**) के लिए सरकारी नौकरियों, शिक्षण संस्थानों और विधानसभाओं में आरक्षण का प्रावधान किया है। इसके अलावा, अन्य पिछड़ा वर्ग (**OBC**) के लिए भी आरक्षण की व्यवस्था की गई है। यह नीतियां जाति-आधारित भेदभाव को कम करने और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई हैं।

7. जातिवाद के खिलाफ आंदोलन:

विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों ने जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया है। जैसे कि दलित आंदोलन, जाति-आधारित भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाने और दलित समुदाय के अधिकारों की रक्षा करने के लिए एक महत्वपूर्ण आंदोलन रहा है। भारतीय साहित्य, सिनेमा, और कला में भी जातिवाद का वर्णन और आलोचना की गई है। जैसे कि प्रेमचंद की कहानियाँ और अंबेडकरवादी साहित्य, जातिवाद की कुरीतियों को उजागर करते हैं और सामाजिक सुधार की दिशा में प्रेरित करते हैं।

8. शिक्षा:

शिक्षा के क्षेत्र में जाति आधारित भेदभाव अभी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। हालांकि आरक्षण नीति के कारण कई अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के छात्रों को लाभ मिला है, फिर भी ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच सीमित है।

9. आर्थिक स्थिति:

आर्थिक दृष्टि से भी जातिवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उच्च जातियों के लोग अक्सर बेहतर आर्थिक स्थितियों में होते हैं, जबकि निम्न जातियों के लोग गरीबी और बेरोजगारी से जूझते रहते हैं।

10. राजनीति:

राजनीति में जातिवाद एक प्रमुख भूमिका निभाता है। कई बार चुनावों में जातिगत समीकरणों का उपयोग किया जाता है और राजनीतिक दल जाति आधारित वोट बैंक बनाने की कोशिश करते हैं।

11. सामाजिक भेदभाव:

समाज के विभिन्न हिस्सों में जाति आधारित भेदभाव अभी भी देखा जा सकता है। जैसे कि विवाह, सामाजिक समारोह, और धार्मिक स्थलों में निम्न जातियों के लोगों के साथ भेदभाव किया जाता है।

12. कानूनी प्रयास और जागरूकता:

संविधान और कानून के माध्यम से जातिवाद के खिलाफ कड़े कदम उठाए गए हैं। इसके बावजूद, इन कानूनों के प्रभावी कार्यान्वयन में समस्याएं आती हैं। लेकिन सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से जागरूकता फैलाने के कारण लोग जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम हो रहे हैं।

आजादी के पहले और आजादी के बाद जातिवाद के खिलाफ जिन महान व्यक्तित्वों ने संघर्ष की मशाल जलायी उनमे राम मनोहर लोहिया एक प्रमुख व्यक्तित्व है । जाती तोड़ो आंदोलन के प्रणेता लोहिया जी के मौलिक विचारों के अनुशरण से जातिवाद की खाई को पाटा जा सकता है।

जातिवाद और लोहिया के विचार

भारत की राजनैतिक पाटियाँ जाति सिद्धान्त पर चल रही हैं, विशाल जनता में हीनभावना भरी जाती है। छोटी जातियों का राजनैतिक व्यवहार अविश्वसनीय लगता है। उनके विचारों की अधीनता की लम्बी परम्परा ने इन जातियों को जड़ बना दिया है। सदियों से उनमें यथास्थिति को चुपचाप स्वीकार करने, परिवर्तन की चाह न रखने, दुःख-तकलीफ के समय जाति को सौभाग्य मानकर उससे चिपके रहने और पूजा, कर्मकाण्ड तथा विनम्रता में ऊँचे जीवन की खोज करने के भाव भरे हैं। परिवर्तन राजनैतिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर करना है। सभी जातियों से देश का नेतृत्व प्राप्त करना जाति पर राजनैतिक हमला होगा। इससे ऐसी क्रान्ति का सृजन होगा जिससे भारतीय समाज मजबूत होगा और सभी लोगों को सुरक्षा ओर आश्वासन मिलेगा जो उस समय जाति-प्रणाली की वजह से कुछ ही लोगों को चाहिए कि वह इन क्षेत्रीय जातियों की पार्टियों को संदेह की नजर से देखे भले ही इन्होंने क्रान्तिकारी चोला पहन रखा है। पार्टियां समाज का विघटन करती हैं। कांग्रेस, कम्युनिस्ट और प्रजा समाजवादी पार्टियाँ जाति-व्यवस्था के ढाँचे को बनाए रखना चाहती है।

जाति-व्यवस्था की व्यापकता के बारे में डॉ. लोहिया ने स्पष्टतः कहा- भारतीय जीवन में जाति सर्वाधिक प्रभावशाली तत्त्व है। वे लोग जो इसे सिद्धान्त में नहीं मानते, उसे व्यवहार में स्वीकार करते हैं। जीवन जाति की सीमाओं में ही बंधा हुआ रहता है और सुसंस्कृत लोग मुलायम आवाजों में जाति-व्यवस्था के विरुद्ध बोलते हैं, पर अपनी क्रिया में वे उसे अस्वीकार नहीं कर पाते। यदि उन्हें उन कार्यों का स्मरण कराया जाता है जो जाति की अविश्वसनीय पुष्टि करते हैं, तो वे उनके विचार तथा भाषण को घृणा से देखते हैं। वस्तुतः वे उन्हीं पर जाति-गत मानसिकता का आरोप मढ़ देते हैं जो उन्हें उनके जातिगत आचरण का स्मरण दिलाते हैं यह कहते हुए कि हम एक ओर सिद्धान्तों और महान् बातों पर स्वस्थ विचार-विमर्श करते हैं, तो दूसरी ओर ये आलोचक वातावरण को जाति की बात करके दूषित करते हैं। उनका कहना है कि ये आलोचक ही जाति का वातावरण पैदा करते हैं। डॉ. लोहिया ने स्पष्टतः माना कि विचार और कार्य में यह विचित्र अलगाव भारतीय संस्कृति की एक तथ्यतः विशेषता है। इसका मूल कारण जाति-व्यवस्था ही है। जाति एक अपरिवर्तनीय संरचना है जो विचार और कर्म में दोगलापन प्रदर्शित करती है।

डॉ. लोहिया चाहते थे कि सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म होना चाहिए, न कि जन्म। जन्म के आधार पर ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य को उच्च समझना अथवा ब्राह्मणों के चरण-स्पर्श करने का स्पष्ट अर्थ है जाति-प्रथा को बनाये रखना। जाति-प्रथा एक जड़-वर्ग का द्योतक है जिसके कारण भारत का समग्र जीवन निष्प्राण हो गया है। उसी के कारण भारत दासता एवं परतंत्रता का शिकार हुआ। डॉ. लोहिया ने जाति-प्रथा के कुप्रभाव के विषय में यह कहा, जाति अवसर को सीमित करती है, सीमित अवसर योग्यता को संकुचित कर देता है, संकुचित योग्यता अवसर को और आगे रोकती है, जहां जाति का प्रभुत्व है, वहां अवसर और योग्यता लोगों के संकुचित दायरों में और अधिक सीमित होती चली जाती है।

जाति-प्रथा के उन्मूलन के लिए लिए डॉ. लोहिया ने अनेक सुझाव दिये। सामान्यतः अन्तर्जातीय विवाहों और सहभोजों को उन्होंने महत्त्व दिया। लेकिन इन्हें प्रशासन एवं समाज द्वारा कड़ाई से लागू करना चाहिए। उन्होंने कहा, जिस प्रशासन और फौज में भर्ती के लिए, और बातों के साथ-साथ, शूद्र और द्विज के बीच विवाह को योग्यता और सहभोज के लिए इन्कार करने पर अयोग्यता मानी जायेगी, उसी दिन जाति पर सही मायनों में हमला शुरू होगा। वह दिन अभी आना है। उनको मान्यता थी कि अन्तर्जातीय विवाहों और सहभोजों से आवश्यक रूप में समता का भाव पैदा होने लगेगा। डॉ. लोहिया ने जाति-प्रथा के तोड़ने में वयस्क मताधिकार और प्रत्यक्ष चुनाव की भूमिका पर भी बल दिया। उनका विचार था कि जैसे-जैसे यह वयस्क मताधिकार चलता रहेगा, चुनाव चलते रहेंगे, वैसे-वैसे जाति का ढीलापन बढ़ता रहेगा। संक्षेप में, डॉ. लोहिया ने आम लोगों में राजनीतिक चेतना भरने और राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए जाति-प्रथा की समाप्ति की दिशा में प्रत्यक्ष चुनाव, वयस्क मताधिकार और विशेष अवसर के सिद्धान्त की आवश्यकता पर चल दिया।

जाति-प्रथा के उन्मूलन की दिशा में डॉ. लोहिया ने, उपर्युक्त सुझावों के साथ-साथ, बह्मज्ञान और अद्वैतवाद को सार्थक सिद्ध किया। जैसे डॉ. लोहिया निरीश्वरवादी थे, पर ब्रह्मज्ञान और अद्वैतवाद के मूल स्वर-हम सब एक ही हैं, को प्रासंगिक बतलाया। अपने व्यक्तिगत संकुचित शरीर और मन से हटकर सबके प्रति अपनापन अनुभव करना ही सच्चा ब्रह्मज्ञान है। इस भांति जाति-प्रथा को समाप्ति को ही सच्चा अद्वैतवाद मानते हुए, उन्होंने कहा, एक तरफ तो अद्वैत चला रहे हैं कि सब संसार एक है, सब समान हैं, पेड़ समान, गन्ध समान, आदमी समान, देवता समान और दूसरी तरफ, अपने ही अन्दर बाह्मण, बनिया, चमार, भंगी, कहार, कापू, माला, मादीगा, न जाने पचास तरह के झगड़े करके बंटवारा, अपने देश को हम छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। डॉ. लोहिया का ब्रह्मज्ञान और अद्वैतवाद से मात्र इतना ही मतलब था कि सब मानव प्राणी समान हैं, सभी सामाजिक समता के हकदार हैं। उनकी दृष्टि में, ब्रह्मज्ञान एकता और अद्वैतवाद समता के प्रतीक हैं, न कि ईश्वर, मोक्ष, स्वर्गादि के आधार हैं। वह ब्रह्मज्ञान के काल्पनिक स्वरूप अथवा अद्वैतवाद के कोरे अध्यात्म को नहीं चाहते थे। वह व्यावहारिक नतीजों को अधिक महत्त्व देते थे। यही कारण है कि डॉ. लोहिया ने वेद-शास्त्रों अथवा धर्म की अव्यावहारिक मान्यताओं को कोई महत्त्व नहीं दिया। वह दोगले व्यवहार और झूठे प्रचार से बहुत घृणा करते थे।

आर्थिक दृष्टि से भी. डॉ. लोहिया ने जाति-प्रथा को तोड़ने पर बल दिया। जाति-प्रथा के कारण प्रायः छोटी जातियां सार्वजनिक जीवन से बहिष्कृत की जाती हैं। उनमें दासता की भावना पैदा हो जाती है। इसी दासता एवं भेदभाव के कारण हर तरह का शोषण इन छोटी, कमजोर एवं पिछड़ी जातियों के लोगों का होता है। वे स्वतंत्रतापूर्वक अपना काम-धंधा नहीं कर सकते। वे गरीब हो जाते हैं और उनकी स्वाभाविक योग्यता क्षीण हो जाती है। इसलिए डॉ. लोहिया की दृष्टि में कमजोर एवं पिछड़ी जातियों को आर्थिक रूप से सबल और उनमें आत्म-सम्मान जाग्रत करने की आवश्यकता है। डॉ. लोहिया ने सुझाया कि सभी भूमिहीन मजदूरों को साढ़े छः एकड़ जमीन मिले, खेतिहर मजदूरों की मजदूरी बढ़ाई जाए, ऊंची से ऊंची आमदनी या नीची से नीची आमदनी के बीच में एक मर्यादा बांधने वाली बात लागू की जाए। उन्होंने स्पष्टतः कहा कि चरम दरिद्रता की अवस्था में सामाजिक चेतना मर जाती है, या कम से कम, क्षीण हो जाती है। समृद्धि और सुख में रहने वाले व्यक्ति अपने और दरिद्र जनता के बीच निर्ममता की प्राचीरें खड़ी कर देते हैं। सामाजिक चेतना का पुनर्जागरण तभी सम्भव है, जब इन प्राचीरों को ढहाया जाये, और ये प्राचीर तभी गिर सकती हैं जबकि आमदनियों का परस्पर अन्तर निश्चित सीमा के अन्दर रखा जाये।

डॉ. लोहिया वर्ग उन्मूलन को भी जरूरी समझते थे। उनके अनुसार, वर्ग उत्पत्ति का कारण केवल आर्थिक नहीं है, बल्कि सामाजिक और बौद्धिक भी है। उनकी दृष्टि में- दौलत, बुद्धि, स्थान के हिसाब से समाज में गिरोह बनते हैं, जिन्हें वर्ग कहते हैं। यहां दौलत, बुद्धि तथा स्थान से डॉ. लोहिया का तात्पर्य क्रमशः आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भेद-भाव से है। ऐसा प्रत्येक वर्ग शोषण करता है और शोषण के द्वारा कोई वर्ग विशेषाधिकार प्राप्त कर लेता है जो एक सशक्त अस्त्र बन जाता है। कुछ विशेषाधिकार जन्म से ही प्राप्त होते हैं, तो कुछ प्राप्त किये जाते हैं। डॉ. लोहिया के अनुसार, जाति, सम्पत्ति और भाषा भारतीय समाज में बुनियादी विशेषाधिकार हैं। जाति और सम्पत्ति तो स्पष्टतः जाने-माने विशेषाधिकार हैं।

जहां तक जाति या वर्ण पर आधारित वर्गों अथवा भेद-भाव, ऊंच-नीच, छूत-अछूत का सम्बन्ध है, डॉ. लोहिया इनकी समाप्ति के लिए जीवन पर्यन्त सक्रिय रहे। उनका कहना था, ष्जो आदमी हिन्दुस्तान की जाति-प्रथा को अपने दिमाग में नहीं रखेगा, जो कि एक वस्तु-स्थिति है, एक खास बात है, और हरेक चीज के लिए वह नींव है, वह कभी भी पूंजीवाद-समाजवाद के चक्कर को समझ ही नहीं पायेगा। डॉ. लोहिया ने मार्क्स के वर्ग-संघर्ष को भारतीय संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं की भूमि पर वर्ग-संघर्ष के रूप में संशोधित करने का प्रयास किया, क्योंकि भारत में वर्ण या जाति को तोड़े बिना समाजवाद की कल्पना नहीं की जा सकती। वर्ण-व्यवस्था को तोड़ने के लिए डॉ. लोहिया ने सामाजिक विषमताओं की समाप्ति पर अधिक बल दिया। उन्होंने 90 प्रतिशत कमजोर पददलित एवं पिछड़ी जातियों को शैक्षणिक संस्थाओं, राजपत्रित अधिकारियों और नेतृत्व पदों पर आसीन करने का सुझाव दिया, ताकि इन लोगों में आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास और भागीदारी की भावनाएं जाग्रत हों।

इस प्रकार जाति-प्रथा को समाप्त करने की दिशा में न्यूनतम आमदनी बुनियादी सवाल है। वह तय करती है कि कुल आमदनी कितनी हो और साथ ही, अधिकतम आय तथा खर्चा भी तय किया जाए, ताकि ऊंची आय वाले छोटी जातियों का शोषण न कर सके

निष्कर्ष-

आधुनिक भारत में जातिवाद एक जटिल सामाजिक समस्या है जो देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढांचे को प्रभावित करती है। जाति व्यवस्था का प्रभाव आज भी विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है, जैसे सामाजिक भेदभाव, रोजगार में असमानता, शैक्षिक अवसरों की कमी, और सामाजिक गतिशीलता में बाधा।

राम मनोहर लोहिया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान समाजवादी नेता और विचारक थे। उन्होंने जातिवाद और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए। उनके कुछ प्रमुख विचार इस प्रकार हैं:

- जातिवाद के खिलाफ संघर्ष: लोहिया जाति व्यवस्था को समाज के विकास में एक प्रमुख बाधा मानते थे। उन्होंने जाति प्रथा के उन्मूलन और सामाजिक समानता के लिए जोर दिया।
- समाजवाद और सामाजिक न्याय: लोहिया ने समाजवाद को सामाजिक न्याय का एक महत्वपूर्ण साधन माना। उनका मानना था कि समाज में आर्थिक और सामाजिक समानता लाकर ही जातिवाद की जड़ों को खत्म किया जा सकता है।
- सप्त क्रांति (**Seven Revolutions):** लोहिया ने "सप्त क्रांति" का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने जाति, पितृसत्ता, नस्लीय भेदभाव, विदेशी शासन, पूंजीवाद, शोषण, और मानसिकता में बदलाव की बात की। जातिवाद के उन्मूलन को उन्होंने इस क्रांति का एक प्रमुख हिस्सा माना।
- अंग्रेजी के वर्चस्व के खिलाफ: लोहिया ने भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया और अंग्रेजी के वर्चस्व को जातिगत भेदभाव से जोड़ा, क्योंकि यह उच्च जातियों और वर्गों के लाभ का साधन बना हुआ था।
- न्यायोचित आरक्षण: लोहिया ने पिछड़े वर्गों और दलितों के लिए आरक्षण का समर्थन किया, ताकि उन्हें समाज में समान अवसर मिल सके।

राम मनोहर लोहिया के विचार आज भी जातिवाद के खिलाफ संघर्ष में प्रेरणा स्रोत हैं। उनके विचारों का उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जहां हर व्यक्ति को समान अवसर मिले और जातिगत भेदभाव समाप्त हो।

REFERENCES

1. डॉ. राममनोहर लोहिया: समता और संपन्नता, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020
2. डॉ. राममनोहर लोहिया: भारत के शासक, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2021
3. डॉ राम मनोहर लोहिया सप्तक्रांति या नवहिंद प्रकाशन, हैदराबाद, प्रथम संस्करण 1966
4. ताराचंद दीक्षित: डॉ. राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2013
5. डॉ राममनोहर लोहिया: भारत माता धरती माता लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020
6. मस्तराम कपूर: आधुनिक भारत के निर्माता राममनोहर लोहिया प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2015
7. ओंकार शरद: लोहिया एक प्रमाणिक जीवनी लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2021
8. डॉक्टर कन्हैयालाल त्रिपाठी :डॉ. राममनोहर लोहिया और सतत समाजवाद प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2013
9. कुमार कौशिक: राममनोहर लोहिया और मैं: लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता, एड्यूक्रीएशन पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019
10. मस्तराम कपूर: डॉ. राममनोहर लोहिया -रचनावली अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2012
11. इंदुमती केलकर: डॉ राम मनोहर लोहिया जीवन और दर्शन, अनामिका प्रकाशक, एवं वितरक लिमिटेड, नई दिल्ली, 2010
12. https://www.mediavigil.com
13. https://archive.org/stream/in.
14. https://hindi.feminisminindia.com